मनमोहन लड्डू

रचयिता—

पं० श्रीरूपनारायण झा 'राकेश' चौगमा ।

प्रकाशक—

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,

संस्कृत बुकडिपो,

कचौड़ीगली, बनारस सिटी ।

प्रथम संस्करण] सन् १९४६ ई० [मूल्य [illegible])


मास्टर प्रिण्टिङ्ग वर्क्स, काशी.

दू आखर हमरो....

एहि में सँ अधिकांश कजरी सुनबाक सौभाग्य हमरो प्राप्त भै चुकल अछि—सेहो रूपने बाबू(राकेशहि)क मुहें ! चहट-गर तत्ते ने लागल जे देश जाइत रही सड़े से दोसरि तेसरि ओ चौमरि सुनितहि गेलियैन्हि ! मेलाक समय जड़कालाक नमहर राति, अन्हरकी गाड़ी मुदा कजरी सुनैत सुनैत सिकड़ौल सँ हड़ाही कोना ठेकि गेलहुँ सें नहि कहि ?

मिर्जापुरी लय, ठेठमैथिली, टटका उपमा, कटगर उत्प्रेक्षा—ई कुल एकठहुरिए जँ देखबा-सुनबाक सेहन्ता हो तँ एहि कजरी सभैक आनन्द लैत जाउ....हमरा धरि ई बड़ चहटगर लागल अछि।

किताब महल,
प्रयाग,
७–२–४५

श्रीवैद्यनाथमिश्र, 'यात्री'
तरौनी।

प्रो. आनन्द मिश्र कें प्राप्त - रमानन्द झा

हम की कहू ?

एहि में नवे छन्द, नवे शैली, नवे नव सभ किछु भेटत, आइतक एहेन विलच्छन साहित्यिक-उपाति कहाँ कतौ सँ आएल होएत ?

नवयुवक कतेको दिन सँ वकध्यान लगौने एम्हरे टक-टक ताकि रहल छथि जे—'ऊगह चान कि लपकह पूआ' तखन बूढ़-सूढ़क त कथे कोन ? मुदा एकवातक डर अवश्शे जौं एहि रसगर-कटगर कजरी कें एकोवेरि सुनि लेताह, तँ कजरी लागल सड़क पर चलनिहारजकाँ पिछड़ि धरि जैबे करताह। स्त्री समाज में—ताहू में युवतीयूथ तँ एकरा हृदय सँ आदर करबेटा करत।

भौजी ! हमरा त एहिवास्ते कतेक उलहन उपराग एखन तक सुनय पड़ल अछि तकर ठेकाने ने ? सभसँ वेशी सारि-सरहोजि तँ अकच्छ कय देलक। मुदा प्रकाशित भेला पर केहेन रंगढंग हेतैक से—हम की कहू ?

राममन्दिर काशी
१०-९-४६ अनन्तचतुर्दशी,

कलेश
काशी

समर्पण

वीणापाणि ! शरण में राखि लियऽ एहि दासकें
सफल करब सब आसकें ना ॥
वरद-करसँ परसब सब अङ्ग,
तुरत होएत अज्ञानक भङ्ग ।
रङ्ग जमिजाय जाहिसँ ने पाबी उपहासकें । सफल० ।
जननि ! हम वड़ अबोध अज्ञान,
कने कनडेरियो देबै ध्यान ।
आनके हरत हृदयसँ हमर दीनता-त्रासकें । सफल० ।
अपन रचना इ तुच्छ लै हाथ,
झुका कय अम्ब ! अभागल माँथ ।
हाथने करब, करैछी अर्पित अपन प्रयासकें । सफल० ।
मनोरथ सदिखन करथि कलेश
गाबिकय सुनबै छथि 'राकेश'
क्लेश दय करुणाकोरक करिऔ भाग्यविकासकें । सफल० ।

मैथिली में मिर्जापुरी कजरी

१

सबसँ प्रथम प्रणाम करैछी उमा महेश कें
गंगा-गुरु-गणेश कें ना ।।
दोसर, महावीर बजरङ्ग,
करथि जे दुष्ट सबहिकें तङ्ग
तेसर-सुमिरि गैब हम श्रीशारदाशेष कें । गंगा० ।
हरथु सब दोष हमर मा काली
हाथ में खप्पर और भुजाली ।
अभयकें दान करथु जे छथि जननी सब देशकें
गंगा-गुरु-गणेश कें ना ।
भैरव सुरवर-कैरव-चन्द
हटाबथु तापत्रय भवफन्द ।
मन्द कय देथु शत्रुकें, ज्ञान देथु 'राकेश' कें ।
गंगा-गुरु-गणेश कें ना ।

२

साड़ी रंगिदे तों रंगरेजवा नव फेशन के
जयबै घर सजन के ना ।
महात्मा गान्धिक ऊँच विचार
ताहिपर वृटिशक अत्याचार ।
लिखि दे इतिहास सन् बेआलिस के दमन के ।
जयबै घर सजन के ना ।
बनाकय अस्थायी सरकार,
जवाहर कैल देश-उद्धार ।
लेपि कारी मुँहपर मारल थापड़ दुशमन कें ।
जयबै घर सजन के ना ।
गेलाह सुभास बोस जापान,
स्वतन्त्र हो भारत ई छल ध्यान ।
देखादे सहगल, साहनबाज, वीर ढिल्लन कें ।
जयबै घर सजन के ना ।
कजरी लिख 'राकेश' क आई,
देशहित भेल कतेक लड़ाई ।
शत्रु सब हारि पढ़ाएल बना से नकशा रनके ।
जयबै घर सजन के ना ।

३

माय बाप के दुलारू धिया दूरि गेली,
देहरी सँ घूरि गेली ना।

छल सजाओल खाट, तकै छलौं हुनके वाट,
की बूझि भने हमर मन चूरि गेलो
देहरी सँ घूरि गेली ना।

केल अटपट व्यवहार जेना पड़ल छल हकार,
तहिना घर आबि न्यौत अपन थूरि गेली,
देहरी सँ घूरि गेली ना

कहल प्रेमकेर वात, बहल उनटल वसात,
बोरी सौँपजकाँ मुँह हमर थूरि गेली,
देहरी सँ घूरि गेली ना॥

अथवा बूझि लेल कड़ू कहल हाथ जुनि धरू,
जानि मेरचाई हमरा ओ गूड़ि गेली,
देहरी सँ घूरि गेली ना।

देखि अहाँकें कलेश, होथि आनन्द 'राकेश',
कहथि सागजकाँ अहाँक मूड़ी मूड़ि गेली,
देहरी सँ घूरि गेली ना।

४

तोहर छातीक यौवन दुनू गोल छौ,
बड़ अनमोल छौ ना।
मेलैं ककरा लै तैयार, कसिकै चोली जालीदार
तोरा देखि गामक छौंड़ा डाबाँडोल छौ,
बड़ अनमोल छौ ना॥
छुटल एकोटा ने बाध, ने छौ अपन चालि साध,
बाँकी गामभरिक एकोटा ने टोल छौ,
बड़ अनमोल छौ ना॥
देखि तोहर ई छबि, जाए कते कें ने फबि,
सूनि लेलक जे मैनासनक बोल छौ,
बड़ अनमोल छौ ना॥
मेलौ देश में स्वराज करै अपने रुचिये काज
आइ लाज तोहर साबुन सँ धोल छौ
बड़ अनमोल छौ ना।
कजरी गाबथि 'राकेश', देखि तोहर सुन्दर भेष,
तोर रूपहिक चारूदिस घोल छौ,
बड़ अनमोल छौ ना॥

५

तोहर देहक छवि सोन सन गोर छौ
जवानीक जोर छौ ना
मदन केलकौ प्रवेश, जिति लेलकौ सब देश,
बिति गेल तोहर वयस किशोर छौ, जवानोक० ॥
मुँह चानसन भान नैन कुटिलकमान,
विम्बफलसन लालटेश ठार छौ, जवानीक० ॥
कते रूप तोहर देखि, अपन भाग्यकें परेखि,
रातिदिन बैसि बहबैत नोर छौ, जवानीक० ॥
'राकेश' कते गौत, देखि तोरा पछतौत,
कहथि आंगी में बसैत दूटा चोर छौ, जवानीक० ॥

६

गहना नै गढ़ि देलकै सोनरा हमर गै
करै छै रगर गै ना।
ओकर तों देख कने चतुराई पहिने लै लेलकै गढ़ाई,
आइ पड़ा क गेलै दरिभंगा शहर गै, करै छै० ॥
कहलै गढ़ि दे डड़कशकाड़ा, बुलकी ऐरन नथिया छाड़ा,
हड़बड़ में कँगना कै देलकै नमहर गै, करै छै० ॥

करतै आब जौं वेशी वात, खेतै थापर मुक्का लात
कात भै कुहरिक मरतै जाकऽ अपना घरगै, करै छै०॥
हम 'राकेश' कें बजाय, देबै फजहति कराय,
चढ़ाकऽ गदहापर घूमैबै भरि नगर गै, करै छै० ॥

७

मेलौ फुलाए उरोज सरोज सन सुन्दर गै,
लागल मन हमर गै ना।
ई बहरैलौ केहेन गोल, एकर दाम छौ अनमोल,
अनका बूझि पड़ै छै दूर सँ जहर गै
लागल मन हमर गै ना।
आडी देह में सटल, तहि में दुनू छौ उठल,
बीच में बूझि पड़ैछौ बहि गैलौ नहर गै
लागल मन हमर गै ना।
सुनैछियौ देवहिन दान, छौंड़ा देखिकऽ जवान,
कोन छौंड़ापर होइछौ मन तोहर गै
लागल मन हमर गै ना।
तोरा सँ करतौ भेंट जरूर, कहौ 'राकेश' राख सबूर,
मिलि ले नहिं तों पाछाँ मचि जैतौ कहर गै,
लागल मन हमर गै ना।

८

हाय ! ने सोहाय धानकेर लहना पिया,
गढ़ा दियऽ गहना पिया ना।
लागै गरदनि उदास, जेना दूरमहँक वास,
हाथ सुन्न अछि हमर बिनु कङना पिया
गढ़ा दियऽ गहना पिया ना।
दियऽ गहना सबटा आनि, एतेक बात लियऽ मानि,
ने त जाए मरब डूबि हम यमुना पिया
गढ़ा दियऽ गहना पिया ना।
देब जावत ने सूति, सकै छी ने तावत सूति,
एहि हेतु हम छोड़ि देब अङना पिया,
गढ़ा दियऽ गहना पिया ना।
'राकेश' हार देखि, प्राण देब हम उपेखि
आनि दियऽ नेत जीव हमर सपना पिया,
गढ़ा दियऽ गहना पिया ना।

९

नयनवाण मारि कतेको कें घालि केलैं
दुनियाँ कें कालि केलैं ना।

हमरा पढ़ै गारि दिनराति, देलक अछि देह प्रानकें साति,
कहै छै खोआक मारितौं बुढ़ियाके जहर गै,
उजड़ल घर हमर गै ना ॥

कजरी सुनि 'राकेश' क आई, कहै छै घरसँ जैब पड़ाए
एकरा पाविक छौंड़ा सेहो भेलै ठेसगर गै,
उजड़ल घर हमर गै ना ॥

* इति *

1745